International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 7.972 Volume 11, Issue 6, June 2024
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

सामाजिक मानदंडों पर सिनेमा का प्रभावः एक अध्ययन

डॉ. अशोक कुमार[1]

सारांश

अपने आरंभ से ही फिल्मों ने समाज को बहुत प्रभावित किया है। गोदार ने कहा था कि सिनेमा दुनियां का सबसे सुंदर छलावा है। सिंनेमा का समाज पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार से प्रभाव पड़ता है। फिल्मों ने समाज को गहराई से प्रभावित किया है। फिल्में समाज का दर्पण होती हैं ये समाज में व्याप्त बुराईयों और विसंगतियों को आम जन मानस के सामने प्रकट कर इसे समूल खत्म करने को प्रेरित करती हैं। फिल्मों के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जाता है। फिल्में सामाजिक सरोकारों से परिपूर्ण होती हैं। परंतु वर्तमान समय में फिल्में सामाजिक सरोकारों से ज्यादा व्यावसायिकता की ओर ज्यादा अग्रसर हैं। इनका समाज और संस्कृति दोनों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। प्रस्तुत शोध पर के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि फिल्मों ने समाज को किस प्रकार से प्रभावित किया है।

परिचय

सिनेमा के प्रभावों को कई प्रकार से देखा जा सकता है। यह फिल्म निर्माताओं और प्रोडूॅसरों के लिए आकर्षक पेशा है। यह अभिनेताओं और अभिनेत्रियों के लिए पैसा के साथ शोहरत कमाने का एक तरीका है। इसे निर्देशक, कहानीकार, संगीतकार और छायाकार द्वारा एक कलात्मक कार्य मानते है। कुछ लोगों के अनुसार, यह साहित्य का श्रव्य–दृश्य अनुवाद है जिसका अपना संदेश और प्रभाव है। दूसरी ओर, सरकार धन और नौकरियों का एक संभावित स्रोत है। अधिकांश फिल्म देखने वालों के लिए, यह केवल मनोरंजन का एक सस्ता और आनंददायक स्रोत है। जो भी हो, सिनेमा ने सिने प्रेमियों के लिए बाजार के एक महत्वपूर्ण हिस्से पर कब्जा कर लिया है।

सिनेमा के प्रभावों को कई प्रकार से देखा जा सकता है। यह फिल्म निर्माताओं और प्रोडूॅसरों के लिए आकर्षक पेशा है। यह अभिनेताओं और अभिनेत्रियों के लिए पैसा के साथ शोहरत कमाने का एक तरीका है। इसे निर्देशक, कहानीकार, संगीतकार और छायाकार द्वारा एक कलात्मक कार्य मानते है। कुछ लोगों के अनुसार, यह साहित्य का श्रव्य–दृश्य अनुवाद है जिसका अपना संदेश और प्रभाव है। दूसरी ओर, सरकार धन और नौकरियों का एक संभावित स्रोत है। अधिकांश फिल्म देखने वालों के लिए, यह केवल मनोरंजन का एक सस्ता और आनंददायक स्रोत है। जो भी हो, सिनेमा ने सिने प्रेमियों के लिए बाजार के एक महत्वपूर्ण हिस्से पर कब्जा कर लिया है।

फिल्म के बारे में इंग्मर बर्गमैन कहते है, फिल्म की तरह कोई और कला हमारे अंतर्मन तक नहीं जाती, और ये सीधे हमारी भावनाओं तक जाती हैं बिल्कुल गहरे, हमारी आत्माओं के अंधेरे कमरों तक।

[1] डॉ. अशोक कुमार, मकान न, 857/2, महादेव कालोनी, कैथल, हरियाणा, ई–मेल, rjashokair@gmail.com,

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

[1] फ़िल्म आर समाज का चोली दामन का साथ है। फ़िल्म और समाज का सम्बंध बहुत गहरा है। फ़िल्में समाज से सीखती हैं और समाज फ़िल्मों से दोनों ही एक सिक्के के दो पहलुओं की तरह हैं। फ़िल्में जहां समाज का मनोरंजन करती हैं, वहीं समाज में िंक्षा सूचना और जागरूकता का प्रसार करती हैं। फिल्मों का निर्माण जिस प्रकार विदे"ाों में प्रारंभ हुआ उसी प्रकार भारत में भी हुआ यानि रूपक चित्रों से पहले यहां भी सीधे–सादे वृत्तचित्र ही बनें। दादा साहब फाल्के ने भारत में पहला रूपक चित्र राजा हरि"ाचंद्र 1913 में बनाकर प्रदर्ि"ात किया परंतु इस फिल्म के पंद्रह वर्ष पूर्व में ही भारत में वृत्तचित्र बनने और प्रदर्ि"ात होने लगे थे।[2]

सिनेमा बीसवीं सदी में मानव जाति को मिले कुछ बेशकीमती वैज्ञानिक उपहारों में से एक है। इसने विश्व के मनोरंजन के परिदृश्य में एक क्रांति ला दी है क्योंकि इससे पहले नाटक, नौटंको व त्योहारों के अवसर पर लगने वाले मेले ही लोगों के मनोरंजन का प्रमुख साधन थे। क्योंकि ऐसे समागम कभी–कभी ही आयोजित हुआ करते थे, अतः मनोरंजन के मामले में लोग अतृप्त रहा करते थे। सिनेमा विश्व के लोगों के लिये मनोरंजन का एक उत्तम साधन बनकर सामने आया है क्योंकि इसे किसी भी वर्ग, जाति या धर्म के लोग एक साथ देख सकते हैं तथा इसका आनन्द पूरा परिवार एक साथ बैठ कर उठा सकता है। यह मनोरंजन का एक सुलभ साधन बन गया है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है, जो समाज में होता है वही साहित्य में लिखा जाता है। फिल्मों की कहानी समाज से ही उठाई जाती है कहते हैं, इसी तरह से यदि वर्तमान दौर में हम सिनेमा की बात करें तो हम ये कह सकते हैं कि सिनेमा समाज का आईना है[3] जो कुछ समाज में घट रहा है या घट चुका है उन विषयों को लेकर या सत्य घटनाओं पर फिल्में बनाइ जाती हैं। इसी तरह से फिल्में जब समाज तक पहुंचती हैं तो मनोंरजंन के माध्यम से समाज तक एक संदेश भी लेकर जाती हैं। फिल्में समाज को प्रभावित करती हैं। संस्कृति के आदान प्रदान में फिल्मों का अहम योगदान है। आज पूरे विश्व में भारतीय फिल्मों को देखा जाता है और भारत में भी विदेशी फिल्मों को देखा जाता है। फिल्मों के समाज पर नकारात्मक और सकारात्मक प्रभाव दोनों ही पड़ते हैं। जहां ये माना जाता है कि फिल्मों के कारण चोरी डकैती, लूट–पाट, मर्डर, बलात्कार की घटनाएं ज्यादा तेज हुई हैं। वहीं आपसी प्रेम प्यार भाई चारे में भी बहुत कमी आई है। फिल्में अपने साथ एक सेंदश लेकर आती हैं। जहां फिल्मों ने लोगों में देश की भावना को जागृत किया है वहीं विकास में भी अहम् योगदान भी दिया है। लोग नई–नई चीज़ें फ़िल्मों से सीखते हैं।

वर्तमान समय में फ़िल्में हमार जीवन का एक अहम् हिस्सा बन गई हैं। फ़िल्में हमारे समाज में एक अलग स्थान रखती हैं फ़िल्मों को देखते हुए हम कभी तो खिल–खिला कर हंसने लगते हैं, लोट–पोट हो जाते हैं तो कभी भावनात्मक रूप से इतना जुड़ जाते हैं कि आंखों से अ"क बहने लगते हैं। भारतीय सिनेमा ने निर्माण और विकास की एक शताबदी पूरी कर ली है। इन दस द"ाकों में फ़िल्म उद्योग ने कई तरह के उतार–चढाव देखे। बाधाओं को पार करते हुए भारतीय फ़िल्म उद्योग आज विकास की राह पर आगे बढ़ रहा है।

सामाजिक मानदंड

सामाजिक मानदंड कथित अनौपचारिक हैं, ज्यादातर अलिखित नियम हैं जो स्वीकार्य और उचित कार्यों को परिभाषित करते है। इनका उददेश्य किसी दिए गए समूह या समुदाय के भीतर, इस प्रकार मानव का मार्गदर्शन करना है।[4]

समाज में रहने के लिए वे कानून या नियम जिससे समाज का विकास होता है उन्हें सामाजिक मानदंड कहते हैं। चार प्रकार के सामाजिक मानदंड हैं जो लोगों को स्वीकार्य माने जाने वाले व्यवहार के बारे में सूचित करने में मदद कर सकते हैं लोकमार्ग, रीति–रिवाज, वर्जनाएं और कानून। इसके अलावा, सामाजिक मानदंड समय, संस्कृतियों, स्थानों और यहां तक कि उप–समूह में भिन्न हो सकते हैं।[5] फिल्में हर दृष्टिकोंण से सामाजिक मानदंडों को प्रभावित करती हैं वह उन्हें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से समाज पर अपना प्रभाव डालती हैं।

इतिहास

फ़िल्मों का इतिहास ज्यादा पुराना नहीं है। वैसे वि"व स्तर पर सिनेमा की शुरूआत हुई थी फ्रांस के ल्यूमियेर ब्रदर्स से, जिन्होंने किया था सिनेमेटोग्राफ का आविष्कार और उससे तैयार अपनी पहली फिल्म को 28 दिसम्बर 1895 को पेरिस के एक कैफे में सार्वजनिक रूप से दिखाया। 7 जुलाई 1896 को बोम्बे के वॉटसन होटल म उन्होंने अपनी फिल्मों का प्रद"न किया। उस समय शायद ही किसी ने यह सोचा होगा कि पर्दे पर चल रही चलती फिरती तस्वीरों को देख रहा हमारा दे"ा कभी फिल्म उद्योग का सबसे बड़ा निर्माता बन जाएगा।[6] इस तरह से शुरू हुई सिनेमा की कहानी। भारतीय फ़िल्मों के इतिहास को हम तीन भागों में बांट सकते हैं।

शुरूआती दौर

दादा साहेब फाल्के से भी पहले सावे दादा यानि हरि"ा चन्द्र सखा राम भाटवडेकर ने मुम्बई में लघु फ़िल्मों का निर्माण किया था। उन्होंने इंग्लेण्ड से मूवी कैमरा यानि सिनेमैटोग्राफ मंगवाया ओर इससे कुछ न्यूज रील फिल्माई। मुम्बई के प्रसिद्ध हैंगिंग गार्डन में उस समय के दो म"ाहुर पहलवानों, पुंडलिक दादा और कृष्ण नाहवी के बीच हुए कु"ाती के मुकाबले को फिल्माया गया। इसे प्रोसेस होने के लिए इंगलैण्ड भेजा गया। ये कोि"ा सन 1912 में की गई थी। सावे दादा ने अपने निजि कारणों से कैमरा बेच दिया। इसी कैमरे से डी पी करेदीकर टी एन पाटनकर और वी पी दिवेकर ने 1000 फीट लम्बी सावित्री फ़िल्म बनाई। इन्हीं दिनों मे मुम्बई के नाना भाई चित्रे ने पुंडलिक नामक एक नाटक को फ़िल्माया लेकिन भारत की पहली फीचर फ़िल्म बनाने का श्रेय जाता है घुण्डीराज गोविन्द फाल्के को, दादा साहब फाल्के द्वारा बंबई अब की मुम्बई में बनाई और प्रदर्षित की गई राजा हरिष्चन्द्र फ़िल्म को पहली भारतीय फ़िल्म माना जाता है। 3700 फुट लम्बी और चार रीलों वाली इस फ़िल्म को पहली बार 3 मई 1913 में मुम्बई के कोरोने"ान थियेटर में प्रदर्"ात की गई। यहीं से भारतीय सिनेमा की यात्रा की शुरूआत मानी जाती है और घुण्डीराव गोविन्द फाल्के दादा साहेब को भारतीय सिनेमा का जनक माना जाता है। कुछ समय तक मूक फ़िल्मों का दौर रहा।

फ़िल्म जगत में एक नई क्रांति का सूत्रपात किया आर्दे"ार ईरानी की पहली बोलती फ़िल्म आलम आरा ने। य भारत की पहली बोलती फ़िल्म थी। अपने सात गानों और जोरदार संवादों के कारण फ़िल्म ने बड़ी वाह वाही लूटी। मनोविनोद के इस नये माध्यम में लागों ने दिलचस्पी दिखाई अतः दे"ा के लगभग सभी नगरों में सिनेमा घर स्थापित किए गए और फ़िल्म निर्माण में भी तेजी आई। आलमआरा के बाद गाने फ़िल्मों का एक अहम् हिस्सा बन गए तथा अन्य भाषाओं की फ़िल्मों में भी गानों को शमिल किया जाने लगा।

आलमआरा मे तो केवल सात गाने थे जबकि इन्द्रसभा में उनकी संख्या बढ़कर 71 हो गई थी। अब स्थिति ये हो गई थी कि बिना गाने के हिन्दी फ़िल्म की कल्पना करना कठिन था। संगीत ने फ़िल्मों के जरीए लोगों के दिलों में एक अलग जगह बना ली थी। सन् तीस के आस पास बंकिम चन्द्र के उपन्यासों और कहानियों पर कपाल कुंडला, रजनी और ग़रीब जैसी फ़िल्में बनी। इस दौर में अनेक प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति फ़िल्म क्षेत्र में शामिल हुए देवकी बोस, वी शांता राम, सोहराब मोदी, और महबूब ने कई अच्छी फ़िल्में बनाई। इनमें माया, अछूत कन्या, दुनिया न मानें, अधिकार, विद्यापति उल्लेखनीय हैं। 20 और 30 के द"ाक में कुछ समय तक वाक् और मूक फ़िल्में बनती रही। फिर धीरे–धीरे मूक फ़िल्मों का निर्माण कम हुआ और अन्त मे बंद हो गया।

तीस के द"ाक में फ़िल्मों के निर्माण में जबरदस्त वृद्धि हुई। प्रतिवर्ष 200 फ़िल्में बनने लगीं इस दौरान वि"वव्यापी मंदी से भारत को भी जूझना पड़ा। मंदी से उबरते ही दूसरा वि"व युद्ध शुरू हो गया । इन दोनो घटनाओं का फ़िल्म उद्योग पर गहरा प्रभाव पड़ा युद्ध के कारण विदे"ाों से कच्ची फ़िल्मों का आना अनि"चित हो गया। फ़िल्मी कैमरों, यंत्रों और अन्य उपकरणों को आयात मे बाधा आई। युद्ध के दौरान यह बात स्वीकार की गई कि फ़िल्म प्रचार और जनमत बनाने का प्रमुख साधन बन गई हैं। सरकार ने सेना में भर्ती और उत्पादन बढाने के लिए अनेक छोटी फिल्में बनाई इससे द"ाकों और सिनेमा घरों की संख्या में वृद्धि हुई अनेक कंपनियों ने फ़िल्म निर्माण कार्य शुरू किया। इसी समय सीमित मात्रा में विदे"ाों से

फ़िल्मों का निर्यात शुरू हुआ। इसने भविष्य में संभावनाओं को खोल दिया। सुलोचना और गौहर ने फ़िल्म क्षेत्र में प्रवे"ा किया इसके बाद फ़िल्म क्षेत्र के द्वार औरतों के लिए खुले।

सन् 1943 में सोहराब मोदी की एक फ़िल्म *किस्मत* एक सिनेमा हाल में साढ़े तीन साल तक चली। उसने सभो पिछले रिकार्ड तोड़ दिए। अ"ाोक कुमार–देविका रानी की जोड़ी ने ये ही मिसाल अछूत कन्या में पे"ा की, फिल्म ज्वार भाटा के साथ दिलिप कुमार आए। देवानंद, राजकुमार, मधुबाला, नरगिस और सुरैया ने अपने उत्कृष्ट अभिनय से जनता के दिलों में जगह बना ली। शांता राम, जयश्री की जोड़ी भी फ़िल्म जगत पर छाई रही।

आज़ादी से पहले की फिल्मों के मुख्य विषय स्वतन्त्रता संग्राम, अंग्रेजी राज से मुक्ति के प्रयास और देशभक्त वीरों के बलिदान की कथाओं पर आधारित रहे। हिंदी फिल्मों का प्रथम दौर ऐतिहासिक और धार्मिक फिल्मों का था इस दार में निर्माता निर्देशक और अभिनेता सोहराब मोदी ने सिकंदर, पुकार, झांसी की रानी जैसी महान ऐतिहासिक फिल्में बनाईं। इन फिल्मों ने लोगों में देश प्रेम की भावना को उद्दीप्त करने का माहौल बनाया।[7]

मध्य दौर

स्वतंत्रता के बाद दे"ा ने सभी क्षेत्रों में तेज़ी से प्रगति की। लोगों ने पूरे आत्मवि"वास जो"ा, भरपूर उर्जा और लगन के साथ काम किया। फ़िल्म क्षेत्र में भी नये विचार और सृजनात्मकता आई।

50 के द"ाक में फ़िल्म उद्योग में सुधार लाने उसका स्तर उठाने और उसे मज़बूती प्रदान करने के लिए फ़िल्म जांच समीति नियुक्त की गई। समीति की सिफारि"ाों के अनुसार सरकार ने दे"ा में प्रतिवर्ष राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय समारोह आयोजित करने की व्यवस्था की। अच्छी फिल्मों के निर्माण के लिए वित्त व्यवस्था करने के लिए फ़िल्म वित्त निगम की स्थापना की गई। फ़िल्म सोसायटी की स्थापना की गई। पूणे में फ़िल्म और टेलिविजन में प्र"ाक्षण देने के लिए भारतीय फ़िल्म और टेलिविजन संस्थान की स्थापना की गई। बच्चों के लिए वि"ोष एवं अच्छी फ़िल्में बनाने के लिए बाल फ़िल्म समीति की स्थापना की गई। सरकार के इस योगदान से भारतीय फ़िल्मों का स्तर उठाने में महत्वपूर्ण सहायता मिली।

स्वतंत्रता के बाद के दो द"ाकों को फ़िल्म जगत का स्वर्ण युग कहा जाता है। इस दौरान शहरी जीवन पर अनेक फ़िल्में बनी। इनमें गुरूदत्त की प्यासा, कागज़ के फूल, राजकपूर की आवारा और श्री 420 और देवानन्द की गाईड, उल्लेखनीय है। अगले कुछ वर्षो के दौरान मनोरंजन प्रधान प्रेम कथाएं और मारधाड़ दोनों किस्म की फ़िल्में बनाई गई। राजेष खन्ना, धमेन्द्र, शर्मिला टैगोर, मुमताज़ और लीना चन्द्रावरकर ने प्रेम कथाओं में अत्यन्त महत्वपूर्ण अभिन्य किया। अमिताभ बच्चन, मिथुन चक्रवर्ती ने मारधाड़ वालो फ़िल्मों में अपने उत्कृष्ट अभिनय से नयी शैली की फ़िल्मों को जन्म दिया। इस वर्ग की फ़िल्म शोले ने बाक्स ऑफिस और जनता के दिलों पर राज किया। इससे आगे दो भाईयों के बिछुड़ने और मिलने की कथा पर 50 से अधिक पारिवारिक फ़िल्में बनी। इस तरह की फ़िल्मों में अमर अकबर एंथनी ने बहुत लोकप्रियता हासिल की। अनेक भावना प्रधान नाटकीय फ़िल्में भी बनीं। अन्तरजातीय विवादों पर भी अनेक फ़िल्में बनीं। इनमें चण्डीदास, सुजाता, चार दिल और चार राहें मुख्य है। गोविन्द निहलानी की फ़िल्म अर्धसत्य में हिंसा और पुलिस की अमानवीयता का चित्रण किया गया है।

वर्तमान दौर

नब्बे के द"ाक में एक फिर पारिवारिक फ़िल्मे बनी, जिनमें मैंने प्यार किया, हम आपके हैं कौन, दिलवाले दुलहनियां ले जाएंगे जैसी फ़िल्मों का निर्माण हुआ। इसी दौर में प्रेम पसंग पर बहुत सारी फिल्में बनी।

21 वीं सदी के प्रारम्भ में भारतीय फिल्म उद्योग लोकप्रियता, कु"ालता और समृद्धि के "ाखर पर बड़े शहरों में, नगरों में मल्टी पलेक्स बनने लगे। लोग फिर से बड़े पर्दे की और आकृष्ट हुए।

पिछले कुछ वर्षो कें दौरान बहुत अच्छी फिल्में बनीं। जिनमें लगान, वीरज़ारा, रंग दे बसंती, राजनीति, अजब प्रेम की गजब कहानी, अवतार, बलैक, थ्री इडियट्स इत्यादि इनमें से अधिकांष ने बॉक्स आफिस पर कमाई की। पिछले दो द"ाकों के दोरान कुछ अत्यंत प्रतिभा"ााली निर्दे"ाकों ने भारतीय फ़िल्म उद्योग पर अपनी छाप छोड़ी। आमिर खान एक अच्छे अभिनेता ही नहीं कु"ाल निर्दे"ाक भी सिद्ध हुए।

भारतीय फ़िल्में अपने संगीत, नृत्य और गानों कारण पूरे वि"व के अनेक दे"ाों में दखी जाती हैं। अफ्रीका के अनेक दे"ाों में भारतीय फिल्में अत्यंत लोकप्रिय हैं। शोखर कपूर ने अनेक अंग्रेज़ी फ़िल्मों का निर्दे"ान किया है। ओमपुरी, अनिल कपूर, इरफान खान, ऐ"वर्या राय और मल्लिका सेहरावत आदि ने हॉलीवुड की फ़िल्मों में अभिन्य किया है। ये तो थी भातीय फ़िल्म इतिहास की बातें।

सामाजिक मानदंडों पर सिनेमा का प्रभाव

कहते हैं कि साहित्य समाज का दर्पण होता है इसी तरह यदि हम ये कहें कि सिनेमा भी समाज का दपर्ण होता है तो यह गलत नही होगा। साहित्य भी समाज से प्रेरित होता है और फ़िल्में भी तो कहीं न कहीं फ़िल्म और साहित्य दोनों में समाज का अकस देखा जा सकता है। या फ़िल्म और साहित्य दोनों ही समाज से प्रभावित रहते है। वर्तमान दौर में यदि हम समाज पर फ़िल्मों के प्रभाव की बात करें तो फ़िल्मों का समाज पर नकारात्मक तथा सकारात्मक दोनों तरह से प्रभाव पड़ता है। जहां पर फ़िल्मों से लोग नई–नई चीज़ें सीख रहे ह, वहीं खबरों में पढते होंगे कि सराफा बाजार की एक दुकान में लूट बिल्कुल फ़िल्मी स्टाईल में हुई। फ़िल्मों में वो घटनाएं दिखाई जाती ह, जो समाज में घट रही हैं या घट चुकी हैं। सिनेमा की बहुत सी फिल्में समाज से प्रेरित होती हैं समाज में चल रही हलचल का प्रभाव सिनेमा पर पड़ता है।

➢ **खान–पान, रहन–सहन पर प्रभाव**

फ़िल्में समाज को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनो रूप में प्रभावित करती हैं। आज हम समाज में जो बदलाव देख रहे हैं उसका मुख्य कारण फ़िल्में भी हैं हम बात करें हैयर स्टाईल, ड्रेस स्टाईल, जिन्दगी को जीने का स्टाईल हम फ़िल्मों से ही सीख रहे हैं, हमारे खान–पान, रहन–सहन, जीवन के हर पहलू को यदि थोड़ा गौर से देखें तो हमें पता चलता है कि फ़िल्मों का हमारे जीवन पर कितना प्रभाव है। आज हमारी ज़िन्दगी का हर क्षेत्र फ़िल्मों से प्रभावित है। लगभग सभी अपनी ज़िन्दगी को फ़िल्मों से जोड़कर देखते हैं। आज उत्तर भारत में दक्षिण भारत के व्यंजन खाए जाते हैं और पसंद किए जाते हैं। पिज्ज़ा, बर्गर, मैकरोनी, इत्यादि फास्ट फूड जिनमें विदे"ाी कंपनियों ने भारतीय बाजारों पर अपना अधिकार जमाया है। डोमिनोज, मैक डी, बर्गर किंग, पिज्जा हट इत्यादि ने समाज को बहुत प्रभावित किया है।

➢ **संस्कृति का आदान प्रदान**

फ़िल्में संस्कृति के आदान प्रदान का भी एक मुख्य साधन हैं। फ़िल्मों के जरीए हम ये जानते हैं कि किसी दे"ा का रहन सहन, खान–पान किस तरह का है। भारत के ही राज्यों की बात करें तो उत्तर भारत के लोग ये नहीं जाने थे कि दक्षिण भारत के लोगों का रहन–सहन, खान–पान कैसा है। जैसे जीन्स टी–"ार्ट का चलन फ़िल्मों से ज्यादा हुआ है।

➢ **सूचना, "ाक्षा, मनोरंजन और जागरूकता**

दुनियां में किसी भी काम की शुरूआत किसी उद्दे"य को लेकर की जाती है और फ़िल्मो का जो ध्येय है वो है सूचना "ाक्षा और मनोरंजन के साथ–साथ जागरूकता फैलाना। वैसे तो सभी फ़िल्में अपने साथ एक संदे"ा लेकर आती हैं। जैसे छुआ–छूत को लेकर बनी फ़िल्म *अछूत कन्या, महिला शोषण के खिलाफ प्रतिघाट सती , भारतीय इतिहास पर रज़िया सुलतान, ताजमहल, मुगल–ए–आज़म और अ"ाोक, दे"ा भक्ति पर हकीकत, बार्डर, एल. ओ. सी. कारगिल., महिला स"ाक्तिकरण पर पाकिज़ा, चांदनी बाज़ार, दामिनी।*

➢ **देश–प्रेम**

जिस तरह साहित्य पर समय या हालात का प्रभाव रहता है। उसी तरह फ़िल्मों पर भी हालात का प्रभाव रहता है। जब दे"ा गुलामी की ज़जीरों में जकड़ा हुआ था उस समय का ये गीत... आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा है दूर हटो ए दुनियां वालो हिन्दुस्तान हमारा है....इस गाने ने गुलाम भारत में तहलका मचा दिया था। भारत छोड़ो आंदोलन की लहर में अंग्रेजों को इस गीत पर प्रतिबंध लगाना पड़ गया था। दे"ा को जगाने वाला यह पहला गीत फ़िल्म किस्मत का था जो आई

थी 1940 में, जो एक बेहद कामयाब फ़िल्म रही। आज़ादी के बाद जब दे"ा के लिए कुर्बानी की बात आई तो फ़िल्मी गीतों ने युवाओं में जो"ा भरा.... सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा..... मोहम्मद रफी साहब और लता मंगे"ाकर की आवाज़ ने लोगों में दे"ा भक्ति की भावना भर दी। ए मेरे वतन के लोगों.... वतन पे जो फिदा होगा अमर वो नौ जवां होगा.... कर चले हम फिदा जानो तन साथियो अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो... ए मेरे प्यारे वतन... देखो वीर जवानों अपने खून पे ..... ये दे"ा है वीर जवानों का अलबेलों का मस्तानों का... इत्यादि गीतों ने लोगों को दे"ा भक्ति के लिए प्रेरित किया। वास्तव में ये थी सिनेमा की समाज को देन...

➢ **प्रेम–कहानी**

आपने ये गीत तो सुना होगा... प्यार मुहब्बत के बिना ये ज़िन्दगी क्या जिन्दगी..... जी हां वास्तव में प्यार मोहब्बत के बिना तो हम ज़िन्दगी की कल्पना भी नहीं कर सकते। जब हम बिना प्यार के ज़िन्दगी की कल्पना नहीं कर सकते तो भला फिल्में कैसे इससे अछूती रहेंगी। भारत में अधिकतर फ़िल्में प्रेम कहानियों पर ही आधारित होती हैं। समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपनी ज़िन्दगी को फ़िल्मों से जोड़कर देखता है। आज कल ता समाज में भी युवाओं की कहानियां फ़िल्मी होती जा रही है। प्रेम कहानियों का प्रभाव समाज पर इतना ज्यादा देखा जा रहा आज लड़की–लड़के के साथ घर छोड़कर भाग रही है तो फ़िल्मी स्टाईल में।

➢ **अ"ालीलता को बढावा**

भारतीय सिनेमा की शुरूआत सन् 1913 में आई एक धार्मिक फ़िल्म राजा हरि"ाचन्द्र से हुई। उसी दौर में धार्मिक और सामाजिक फ़िल्में बनीं। उसके बाद फ़िल्मों को मनोरंजन का साधन ज्यादा माना जाने लगा। फ़िल्मों में कुछ ऐसे लोग आए जिनका ध्येय केवल पैसा कमाना था और वे केवल फ़िल्मों को केवल मनोरंजन का साधन मानते थे जैसा कि *डर्टी पिक्चर* का ये डायलॉग भी तो है... एंटरटेनमेन्ट...एंटरटेनमेन्ट...और एंटरटेनमेन्ट...

फ़िल्मी रोमान्स ने युवक युवतियों के मन में प्रेम और विवाह के प्रति कई असमंजस डाल दिये हैं कि वे वास्तविक वैवाहिक जीवन में सामन्जस्य नहीं कर पाते। कछ अ"लील किस्म के गीतों ने समाज पर बुरा प्रभाव डाला है। **जैसे ओए–ओए...... सैक्सी–सैक्सी मुझे लोग बोलें..... मेरी पेंट भी सेक्सी...... आती क्या खण्डाला........ मुन्नी बदनाम हुई.......... शीला की जवानी...... इन शब्दों का एक उदाहरण छोटा सा ..... हमारे पड़ोस में एक लड़की थी यही कोई 20 साल की उसका नाम था जी हां मुन्नी.... अब कुछ लड़के क्या करते कि जैसे ही वो उनकी गली से गुजरती तो वे लड़के अपने मोबाईल में गाना चला देते ...... मुन्नी बदनाम हुई.......**

आज भारतीय फिल्मों में नंगापन अ"ालीलता आम दखी जा सकती है। ना केवल देखी जा सकती है बल्कि जैसे जैसे समय बढ़ रहा है अ"लीलता भी बढती जा रही है।

➢ **हिंसा और अपराध को बढावा**

जैसे जैसे अपराध की पृष्ठ भूमि पर फ़िल्में बनती रहीं। अपराध जगत में बदलाव आया। असंतुष्ट, बेरोजगार और अकर्मण्य युवकों को यह पैसा बनाने का शॉर्टकट लगने लगा और सब स्वयं को यंग एंग्रीमेन की तर्ज पर सही मानने लगे। आए दिन आप सुनते होंगे कि आमुक डकैती की घटना एक दम फिल्मी अंदाज में हुई। मैं यहां पर ये नहीं कहाना चाहता कि समाज में अपराध के बढते आंकड़ों के प्रति फ़िल्में ही जिम्मेवार हैं लेकिन हां फ़िल्मों ने अपराधियों के चरित्रों को जस्टीफाई कर युवकों को एक बार असमंजस में जरूर डाला होगा।

अमेरिकी बच्चों पर किये गए एक शोध के अनुसार 16 वर्ष की आयु तक आते बच्चे टीवी पर प्रसारित फिल्मों में तकरीबन 33000 हत्याएं और दो लाख हिंसक दृ"य देख चुके होते हैं। स्वाभाविक है कि इस प्रकार के दृ"य देखने से आक्रामकता बढ़ती हैं।[8]

1950 के द"ाक में अमेरिका और कनाडा में फिल्मों में हुई हिंसा के अध्ययन में पाया गया कि अगले दो द"ाकों में ही इन दे"ाों में हत्याओं की दर लगभग दो गुना हो गई। केवल हत्याएं ही नहीं अन्य हिंसक अपराधों के बढ़ने में भी फिल्मों में दिखाई हिंसा को ही देषी पाया गया।

भारतीय सिनेमा के आरंभिक द"ाकों में जो फ़िल्में बनती थीं। उनमें भारतीय संस्कृति की महक रची बसी होती थी तथा विभिन्न आयामों से भारतीयता को उभारा जाता था। बहुत समय बाद पिछले कुछ वर्षो में ऐसी दो फ़िल्में मिली है जिनमें हमारी संस्कृति की झलक थी। *हम दिल दे चुके सनम और हम साथ साथ* हैं और हां दे"ा के आतंकवाद पर भी कुछ अच्छी सकारात्मक हल खोजती फ़िल्में बनी हैं फ़िज़ां और मि"ान क"मीर...

भारतीय जनमानस में पौराणिकता का विशेष महत्त्व है और भारतीय सिनेमा में भी इसका एक विशिष्ट स्थान है। इसका एक उदाहरण है फिल्म ''राजा हरिशचंद्र जिसका निर्माण एवं निर्देशन दादा साहब फालके ने किया थ। धार्मिक और पौराणिक आख्यान पर आधारित होन के कारण इस फिल्म ने भारतीय जनमानस पर गहरी छाप छोड़ी। साठ के दशक तक आते–आते हिन्दी फिल्म जगत में पौराणिक आख्यानों पर आधारित फिल्मों ने भारतीय जनमानस पर अपना अमिट प्रभाव डाला। 'राजा हरिशचंद्र' से लेकर 'माई फ्रेंड गनेशा' तक यह लोकरंजन का भाव सदैव हो समाज को विनोदित करता रहेगा। इस प्रकार की फिल्में जनमानस के अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा, बड़ों के प्रति आदर तथा नैतिकता के गुणों का विकास कर चरित्र का निर्माण करती है।[9]

सिनेमा का समाज पर प्रभाव[10]

सिनेमा के सकारात्मक प्रभाव

सिनेमा एक ऐसी प्रणाली के रूप में विकसित हुआ है जो मनोरंजन का साधन होने के साथ–साथ कई प्रकार के लाभ भी प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, इसका समाज के लिए अत्यधिक शैक्षिक और सूचनात्मक मूल्य है। दर्शकों का बहुमत बच्चों से बना है, और निर्देशात्मक फिल्में उन्हें शिक्षित करने का एक उत्कृष्ट तरीका हो सकती हैं। परिणामस्वरूप, सिनेमा फिल्मों के माध्यम से कई विषयों को सिखाकर शिक्षा को व्यापक बनाने में सहायता कर सकता है। चित्रांकन प्रभाव का उपयोग नैतिक कर्तव्यों, जिम्मेदारियों, स्वच्छता की आवश्यकता, नागरिक भावना, महिलाओं के प्रति सम्मान और अन्य विषयों को व्यक्त करने के लिए भी किया जा सकता है।

लोगों के विचार और व्यवहार फिल्मों और कहानियों से गहराई से प्रभावित होते हैं। यह एक सुधारात्मक उपकरण के रूप में काम कर सकता है, जो मानव तस्करी, घरेलू दुर्व्यवहार, भ्रष्टाचार, गरीबी, सामाजिक बहिष्कार और अन्य भेदभावपूर्ण व्यवहार जैसी सामाजिक बुराइयों को उजागर कर सकता है। फिल्मों और अभिनेताओं ने लोगों के विचारों और कार्यों को प्रभावित किया है; वे नए रुझान स्थापित करने के माध्यम हैं जिनका लोगों के सामाजिक जीवन में तत्काल परिणाम होता है।

कड़वे सच को चित्रित करने के लिए, भारतीय फिल्म अन्य चीजों के अलावा हिंसा, नग्नता, नस्लीय पूर्वाग्रह, अन्याय और असमानता को बढ़ावा देने में तेजी से शामिल हो गई है। एक्शन फिल्मों में अक्सर बहुत अधिक हिंसा दिखाई जाती है और युवा लोगों के दिमाग पर इसका बुरा और असंवेदनशील प्रभाव पड़ता है।

रूढ़िवादी धार्मिक अनुष्ठानों, पारंपरिक विचारों, लिंग भूमिकाओं आदि का अतिशयोक्ति एक ही समुदाय के सदस्यों के बीच दरार पैदा करती है। मीडिया में कुछ दृश्य किसी विशिष्ट जनजाति या समुदाय के लिए अपमानजनक हो सकते हैं। परिणामस्वरूप, यह उनके मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करता है और साथ ही उन्हें परेशान भी करता है।

सिनेमा का नकारात्मक प्रभाव

सिनेमा के व्यावसायीकरण के परिणामस्वरूप मूल्यों और सूचनात्मकता का क्षरण हुआ है। भारत में फिल्म निर्माता और कलाकार सिनेमा को पैसा कमाने का साधन मानते हैं, इसलिए वे सामग्री का दायरा बढ़ाने का कोई प्रयास नहीं करते हैं और केवल अंतिम लक्ष्य तक ही सीमित रहते हैं।

बड़े स्क्रीन पर दिलचस्प विषयों को देखना हमेशा ताज़ा और अच्छी तरह से तैयार होता है। इनका दिमाग पर बेहद अनुकूल और दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है, लेकिन सस्तो और घटिया फिल्में दर्शकों के दिमाग पर बहुत नकारात्मक प्रभाव डालती हैं। यह व्यापक धारणा है कि आज के अपराध सिनेमाई प्रभावों का परिणाम हैं। खुले और प्रदर्शनात्मक विषयों के अलावा, दूषित मेल भी फेंके जाते हैं। वे हमारी संस्कृति और समाज पर कहर ढाते है। सिनेमा और टेलीविजन बच्चों के स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाते हैं।

जवरीमल्ल पारख के अनुसार ''फिल्म माध्यम की यह विशेषता है कि यह जीवन की वास्तविकता को जीवन से भी विराट रूप में दिखाकर लोगों को गहरे रूप में प्रभावित कर सकता है।[11]

लक्ष्य फिल्मों या टेलीविज़न शा को बहुत जल्दी खारिज करना नहीं है। चयनात्मक और समझदारी से कार्यक्रम का चयन वांछनीय होगा। विद्यार्थियों को अच्छी फिल्मों से रूबरू कराना चाहिए। किसी भी समय देखी जा सकने वाली फिल्मों और टीवी श्रृंखलाओं की संख्या सख्ती से सीमित होनी चाहिए।

फिल्म का लोगों के दिमाग पर खासा असर है. यह काफी शिक्षाप्रद है. इसमें शैक्षिक विस्तार के क्षेत्र में उत्कृष्ट परिणाम देने की क्षमता है।

उपसंहार

कुल मिलाकर हम बात करें तो फ़िल्में समाज से कम सीख रहीं हैं बल्कि समाज को सीखा ज्यादा रही हैं। आज व्यक्ति के नैतिक मुल्यों में जो गिरावट देखी जा रही है। जो नैतिक मुल्य इन्सान के अन्दर खत्म होते जा रहे हैं। बेटा बाप से बड़ा हो गया है। हम अपने संस्कारों को भूलते जा रहे हैं। परिवार टूट रहे हैं। प्रतिदिन असंख्य लड़कियो के साथ बलात्कार होते हैं। अपराध बढ़ रहे हैं। इनका मुख्य कारण क्या हैं फ़िल्में, फ़िल्में समाज को अन्दर तक प्रभावित करती हैं। फ़िल्मों में भी मारधाड रक्तपात, अपराध बढता जा रहा है। सिनेमा आज समाज को किस ओर ले जा रहा है।

आज फ़िल्मों में वो गीत नहीं रहे कि *इन्साफ़ डगर पे बच्चो दिखाओ चलके ये दे"ा है तुम्हारा नेता तुम्हीं हो कल के....* . बल्कि ये समझाया जा रहा है कि ... *छोटा बच्चा जान के हमको ना समझाना रे.....*

तो किस ओर जा रहा है भारतीय सिनेमा.... भारत नाट्य शास्त्र के प्रणेता *भरत मुनि* ने मंच पर कला के प्रद"र्न के बारे में बताया था कि मंच पर क्या दिखाना चाहिए और क्या नहीं जो चीज़ मंच पर दिखाने के लायक नहीं है यदि उसे मंच पर दिखाया जाएगा तो उसका नुकसान भोगना ही पड़ेगा। समाज में सन्तुलन बना रहे इसीलिए कानून का निर्माण किया जाता है, नियम बनाए जाते हैं। यदि समाज में नियम, कानून न हों तो समाज में असंतुलन हो जाएगा। इसो तरह से फ़िल्में भी समाज पर गहरा प्रभाव डालती हैं। जहां अच्छी फिल्में समाज के विकास में सहायक होती हैं वहीं खराब फ़िल्में समाज को पीछे धकेलती हैं। फ़िल्में समाज को आगे लेकर जाएं उसका विकास करें इसी के मद्देनज़र फ़िल्म सैंसर बोर्ड तैयार किया गया ताकि खराब फ़िल्मों को निर्माण न हो और समाज पर इनका बुरा प्रभाव न पड़े।

वर्तमान समय में भारतीय फ़िल्मों में नारी का शोषण दिखाया जाता है। नारी को आज भी भोग की वस्तु के रूप में परोसा जाता है। 21वीं सदी में भी भारतीय सिनेमा बीमार मानसिकता का "िाकार ह। मर्डर, मर्डर–2 फिर 3, जिस्म, जिस्म–2 कामसूत्र इत्यादि ना जाने कितनी फ़िल्में आईं और आ रही हैं और इसके साथ आईटम सॉग यानि औरत क्या है आईटम?.... बस मज़ा लो.... इसीलिए तो बलात्कार छेड़–छाड़ की घटनाएं दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं।

भारतीय फ़िल्मों में उस समाज का जिक्र बहुत कम हाता है। जो दे"ा के विकास में अहम् योगदान देते हैं। लाईन में लगे अंतिम व्यक्ति के विकास के लिए क्या किया जाए.... यानि कि व्यक्ति का विकास होगा तभी समाज का विकास होगा और जब समाज का विकास होगा तभी दे"ा का विकास होगा।

गोदार ने कहा था कि सिनेमा दुनियां का सबसे सुंदर छलावा है। सच य भी है कि सिनेमा की अपनी एक स"ाक्त और अलहदा ज़बान व व्याकरण भी है। जिसे समझना और समझा पाना हर किसी के व"ा में नहीं होता।

संदर्भ ग्रंथ

---

[1] Jai Singh, (2013) Bhartiya Cinema ka Safarnama. Vritchitar Lekhan Evam Film Taknik, Prakashan Vibhag Suchna aur prasaran mantralya, Bharat Sarkar. (pp.1)

[2] Jai Singh, (2013) Bhartiya Cinema ka Safarnama. Vritchitar Lekhan Evam Film Taknik, Prakashan Vibhag Suchna aur prasaran mantralya, Bharat Sarkar. (pp.)

[3]. Dube, N. (2001, February 15). Bhartiya Filmein Aur Samaj by Neeraj Dubey. Retrieved April 4, 2024, from www.hindinest.com website: http://www.hindinest.com/drishtikone/filmsociety.htm#google_vignette

[4] *Social norms defination*. (2021). Https://Www.unicef.org/Media/111061/File/Social-Norms-Definitions-2021.Pdf; unicef.

[5] Arungwa, S. (n.d.). 1.5 Social Norms: Folkways, Mores, and Taboos. *Openoregon.pressbooks.pub*. https://openoregon.pressbooks.pub/crimjustsysintro/chapter/1-5-social-norms-folkways-mores-and-taboos/

[6] पांडेय अनिल कुमार, "सिनेमा का आधुनिक वर्ग पर प्रभाव", मीडिया मीमांसा, अप्रैल-जून, 2013, पृ.19-24

[7] वेंकटेश्वरडॉ) .एम .2019, February 11). हिंदी फिल्में और सामाजिक सरोकार .Retrieved April 4, 2024, from m.sahityakunj.net website: https://m.sahityakunj.net/entries/view/hindi-filmen-aur-saamaajik-sarokaar

[8] पांडेय अनिल कुमार, "सिनेमा का आधुनिक वर्ग पर प्रभाव", मीडिया मीमांसा, अप्रैल-जून, 2013, पृ.19-24

[9] रानीडॉ मंजु) .2021, July 1). सिनेमा और समाज अन्तर्संबंध एवं प्रभाव | Garbhanal. Retrieved from www.garbhanal.com website: https://www.garbhanal.com/sinema-aura-samaja-anatarasanbandha-evan-parbhava

[10] *Do films reflect or influence the society?* (2023, August 23). Answers. http://wiki.answers.com/Q/How_do_movies_affect_society

[11] रानीडॉ मंजु) .2021, July 1). सिनेमा और समाज अन्तर्संबंध एवं प्रभाव | Garbhanal. Retrieved from www.garbhanal.com website: https://www.garbhanal.com/sinema-aura-samaja-anatarasanbandha-evan-parbhava